पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में शवासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्यधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से वारणावत लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्‌भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदेव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **—वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! मेरे में वह महानता और सत्ता दो, कि मैं इस यज्ञ वेदी को यहाँ भी अपनाता जाऊँ और सूर्य लोक में जाऊँ तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर, संसार को ऊँचा बनाता चला जाऊँ। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो। यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुव मण्डल तक जाऊँ तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। हे प्रभु! मेरा जीवन यज्ञमय हो।

हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो, जिससे विधाता! हम संसार रूपी महान् वेदी की रक्षा कर सकें, जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं। हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं। हे विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का आज मेरे द्वारा न आए, वह खरदूषण मेरे द्वारा न आएँ। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके हमारी रक्षा करें। आज हमें इस भगवान् राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा होती है। दैत्यों को शान्त किया जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 593	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अंक : 668
वर्ष : 51	44	समग्र वर्ष : 57

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. चरित्र का स्त्रोत	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-7
4. मृत्यु का अभाव है	पूज्यपाद-गुरुदेव	8-23
5. पूज्यपाद-गुरुदेव का निर्णय	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-25
6. ऋषि-मुनियों का महाराजा जाह्नवी से सम्वाद	पूज्यपाद-गुरुदेव	26-33
7. महर्षि का कात्याङ्ग के गृह में उपदेश	पूज्यपाद-गुरुदेव	34-36
8. ऋषियों के उद्‌गार		37
9. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् शुभ आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा पुनः से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्राङ्गण में दिनाँक 25 नवम्बर 2022 से 27 नवम्बर 2022 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

आप सभी को कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनायें।

गताङ्क से ....

चरित्र का स्त्रोत

अधिकारी को ही अधिकार

आओ, मेरे प्यारे! राजा रावण को ऋषिवर ने कहा हे राजन्! मुझे तो ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा क्यों? उन्होंने कहा अधिकार, अनाधिकार चेष्ठा करने से, इस मानव समाज में अधिकार, अनाधिकार चेष्ठा जब होने लगती है, वह काल बड़ा ही, राजा के लिये महान् सुन्दर नहीं होता। प्रजा के लिये सुन्दर नहीं होता। तुम्हें रावण यह प्रतीत है, एक समय तुम्हें देखो, लङ्का का राष्ट्र तुम्हें प्राप्त हुआ था, उस समय महाराज पुलस्त्य ऋषि महाराज और महाराज महीदन्त यह चाहते थे कि लङ्का का स्वामी रावण होना चाहिये। परन्तु देखो, मेरा विरोध तुम्हें स्मरण होगा, सबसे प्रथम मैंने विरोध किया था, यह कहा था कि रावण राजा के बनने योग्य नहीं है। क्योंकि अधिकार, अनाधिकार चेष्ठा की गई, जहाँ अनाधिकार चेष्ठा की जाती है वहाँ देखो, प्रजा का विनाश हो जाता है। प्रजा में चरित्र नहीं आता, और जहाँ चरित्र नहीं होता वहाँ राजा का राष्ट्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। यह तुम्हें प्रतीत है, मैंने यह तुमसे कहा था, परन्तु यहाँ संसार में अधिकार और अनाधिकार की मीमांसा यह है कि जिस कार्य का कोई अधिकारी नहीं हो, उसे वह वस्तु प्राप्त नहीं होनी चाहिये। **केवल वास्तव में मान भी देखो, उसी का होना चाहिये, जो मान में आ करके, अभिमान न आ जाये।** कोई और यदि मान में अभिमान आ गया, तो उस मानव का विनाश हो गया। इसी प्रकार हे राजन्! जब राजा ने देखो, विज्ञान आ जाता है, विज्ञान के साथ चरित्र नहीं रहता। उस राजा का विज्ञान क्या करेगा अग्नि प्रदीप्त होने से और क्या हो सकता है?

स्त्रोतवत् को अपनायें

मेरे प्यारे! कोई महापुरुष आता है। ऋषिवर! चरित्र पुरुष आता है, मानो वह अग्नि प्रदीप्त करके चला जाता है। संसार में इसी प्रकार हे राजन्! यह तुम्हें

प्रतीत है, यह मैंने अपने अनुभव का वाक्य तुम्हें प्रगट कराया है। चरित्र की मीमांसा क्या है कि आज हम अपने राष्ट्र को उन्नत बनाएँ। राष्ट्र कैसे उन्नत बन सकता है यह भी हमें विचारना है, विचारना यह कि स्वयं अपने मानव को मानववत् अपने को चरित्रवत् बनाना है, संयमी बनाना है। जब तक हम स्वयं संयमी नहीं बनेंगे, हम एक-दूसरे को संयमी बना ही नहीं सकते। मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा यह वाक्य क्या कह रहा है? क्या हम सदैव अपने प्रभु, उस प्रभु से अपना संलग्न, अपने प्रभु से हमारी प्रीति होनी चाहिये, हमारा जीवन, जब प्रभु से सुगठित रहेगा, क्योंकि **प्रभु चरित्र का स्त्रोत है** देखो, सर्वत्र उसी के स्त्रोत से उत्पन्न होते हैं। इसीलिये बेटा! देखो, वह जो जहाँ से स्त्रोत का प्रारम्भ होता है, हमें उस स्त्रोतवत् कारण को अपना लेना चाहिये जिससे बेटा! देखो, हम संसार में इस मानववत् में, राष्ट्रवत् में बेटा! अपनेवत् को पवित्र बना सकें। चरित्र की प्रतिभा को जानते हुये बेटा! हम इस संसार सागर से पार हो जायें।

सत्यवाद

आओ, मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं कोई अधिक चर्चा प्रगट करने नहीं आया, वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा यह है क्या हम चरित्र को ऊँचा बनायें, अपने आप को ऊँचा बनायें। चरित्र किसे कहते हैं? जो मानो अचरित्रवादी उसे कहते हैं जो मानव अपनी आत्मा का सदैव हनन करता रहता है। जो आत्मा क्या, मुनिवरो! देखो, आत्मा को हनन करने वाले प्राणी होते हैं, वह सदैव नारकिक कहलाये जाते हैं। वही तो मुनिवरो! देखो, अचरित्र है, क्योंकि मानव को अपनी आत्मा का हनन नहीं करना चाहिये। आज जो मानव कार्य को करता है यदि उसका अन्तरात्मा यह कहता है क्या यह कार्य सुन्दर नहीं है तो वह नहीं करना चाहिये। परन्तु मानव का यही तो चरित्र है, और जब मानव की आत्मा का हनन करता रहता है, वह मुनिवरो! देखो, चरित्रवान् व्यक्ति नहीं होता, वह सदैव अपनी आत्मा का विश्वासी नहीं होता, आत्मा के ऊपर उसका विश्वास नहीं होता, क्योंकि उसका अन्तरात्मा उसे पुकार रहा है, कह रहा

है, हे मानव! यह तुच्छ कार्य है, इसको न कर, परन्तु उस समय भी कर पाता है, तो वही तो तेरी हिंसा है। सबसे प्रथम हिंसा ही वह है। परन्तु अहिंसा परमोधर्म वही है, जो आत्मवत् कार्य किया करता है, मानो वही सत्यवाद है, वही चरित्र है, बेटा! देखो, इसकी मीमांसा हमारे यहाँ आचार्यों ने की है। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। आज के इन वाक्यों का अभिप्रायः यह कि हम अपने जीवन को वास्तव में चरित्रवत् बनाते चले जायें। क्योंकि हमारे जीवन में हमारा जीवन उस काल में पवित्र बनेगा, जब हमारे में चरित्र होगा, मानवता होगी, पवित्रवाद होगा उसी काल में बेटा! हम संसार सागर से पार हो सकेंगे। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चायें बेटा! कल प्रगट कर सकेंगे। आज के इन वाक्यों का अभिप्रायः यह है, क्या हम अपने राष्ट्र को, अपने मानव समाज को परमात्मा से सुगठित बनायें, क्योंकि परमात्मा देखो, आनन्द का स्त्रोत है, चरित्र का स्त्रोत है, हमें इसीलिये परमात्मा को अपनाना चाहिये। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चायें बेटा! कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य यह समाप्त होता गया।

आज के इन वाक्यों का अभिप्रायः यह क्या हम परमात्मा का चिन्तन करते रहें, वैदिक प्रकाश का अपनाते हुये, हम इस संसार सागर से, अन्धकार से पार होते रहें। प्रकाश में जाने का प्रयास करें, क्योंकि परमात्मा के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती, वहाँ सदैव प्रकाश रहता है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चायें बेटा! कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त होता गया, अब वेद का पाठ होगा।

वेद पाठ ....

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो!

दिनाँक : 15 सितम्बर, 1969

॥ ओ३म् ॥

मृत्यु का अभाव है

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी प्रायः अनन्तमयी माना गया है क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुये हैं, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, क्योंकि वे सीमा में आने वाले नहीं हैं, वे प्रायः अनन्तता में सदैव रमण करते रहते हैं। और वह अनन्तवान् हैं, इसीलिये हम ये कहा करते हैं कि हम उस परमपिता परमात्मा की महती, अथवा उसके गुणों का गुणगान गाना हमारा कर्त्तव्य है। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा का जो अनन्तमयी प्रकाश है, अथवा उसकी जो अनन्तमयी रचना है, वह इतनी अनन्तमयी है, क्या उसके ऊपर सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, नाना प्रकार का अन्वेषण चलता रहा है। और मानव अपने में विचार-विनिमय करता रहा है, कहीं वह नाना प्रकार के यन्त्रों में वह प्रवेश हो जाता है। कहीं प्राण और अपान के द्वारा एकाग्रता का अव्रत करता हुआ, परमात्मा का दर्शन करना चाहता है। परन्तु कहीं वह, यह विचारता है कि मेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिये, मैं मृत्युञ्जय बनूँ, तो उस परमपिता परमात्मा की महती को जानता रहूँ। एक मानव यह विचार-विनिमय कर रहा है, क्या, मैं आत्मा के लोक को जानना चाहता हूँ कि आत्मा किस लोक में वास करता है।

अनुसन्धान ही जीवन

बेटा! नाना प्रकार का विचार-विनिमय मानव करता रहा है, कहीं मानो नाना प्रकार के यन्त्रों के द्वारा अग्नि की धाराओं पर सर्वत्रता को अपने को दृष्टिपात करना चाहता है। कहीं तो उस परमपिता परमात्मा का जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, उसके ऊपर विचार-विनिमय करता है, तो नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की माला बना लेता है, और माला बना करके उसमें एक-दूसरे का समन्वय करने का प्रयास करता है, और अपना यातायात बनाने के लिये सदैव तत्पर रहा है। तो बेटा! यह सृष्टि के प्रारम्भ से यह क्रियाकलाप चला आ रहा है, और मानव उसके ऊपर विचार-विनिमय करता रहा है, कहीं मानो देखो, अपनी जितेन्द्रियों को अपने इन्द्रियों में जितेन्द्रियता का साहस परणित करने लगता है, कहीं मानो देखो, मनस्तत्त्व आत्मां पुरूकाशा ब्रहे देवतवाम् आत्मा के प्रकाश में एक मनस्तत्त्व के द्वारा वे एकाग्र करता हुआ, बुद्धि को माध्यम बनाता हुआ, और वह चित्त के मण्डल में, बेटा! नाना प्रकार के संस्कारों को, बेटा! उद्‌बुद्ध करता रहता है। तो यह सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहा है, कहीं मानो देखो, विज्ञान अपनी आभा में रमण करता रहता है, कहीं मानो देखो, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो करके, परमात्मा का दर्शन करना चाहता है। तो यह जो नाना प्रकार का एक विचार-विनिमय सृष्टि के प्रारम्भ से हो रहा है, तो इसके ऊपर बेटा! हमें अपने में विचार-विनिमय करना चाहिये और उस परमपिता परमात्मा का जो यह अनन्तमयी यह ब्रह्माण्ड है, इस ब्रह्माण्ड में हम अनुसन्धान करते रहें, और विचार-विनिमय करते हुये, अपने मनस्तत्त्व की शान्ति के लिये सदैव मृत्युञ्जयी बनने के लिये सदैव तत्पर रहा है।

मृत्युञ्जय बनने की धारायें

आओ, बेटा! तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जिन वाक्यों को मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुये कहा है, क्या मानव, अपने को मृत्युञ्जय बनाना चाहता है, कहीं वह याग के माध्यम से और याग भी बेटा! कई प्रकार

के यागों का अपने में अन्वेषण करता रहा है। कहीं मुनिवरो! देखो, अग्निष्टोम याग के द्वारा, कहीं अजामेध याग के द्वारा, कहीं वाजपेयी याग, नाना प्रकार के यागों का अपने में चयन करता रहता है। कहीं अश्वमेध यागों का वर्णन करता रहता है, तो मूल में यह कि संसार में, मानव अपने में देखो, अपनेपन को ही दृष्टिपात करता रहता है, ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने वाला, अपने में मृत्युञ्जय बनना चाहता है। तो आओ बेटा! देखो, मैं तुम्हें मृत्युञ्जय तो बनाना नहीं चाहूँगा, केवल विचार-विनिमय यह कि ऋषि-मुनियों का जो अपना विचार है, ऋषि-मुनियों की जो अपनी धाराएँ हैं, मनन और चिन्तन करने की वह बड़ी विशुद्ध रूप में रही हैं और वह अपने को कहाँ-कहाँ ले जाते रहे हैं, इसके ऊपर बेटा! अपना मन्तव्य अपना कुछ सूक्ष्म-सा प्रगट कराना चाहता हूँ।

ऋषि-मुनियों का मृत्यु पर चिन्तन

आओ, मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में, बेटा! महात्मा जमदग्नि मुनि के यहाँ, एक सभा हुई, और वह सभा इसीलिये, विचार-विनिमय में करने के लिये क्या, यह मृत्यु क्या है? जो प्रत्येक मानव मृत्यु के ऊपर बेटा! अपना विचार-विनिमय करता रहा है, यह मृत्यु संसार को रूला देती है, और मानव मृत्युञ्जय बनना चाहता है, परन्तु मृत्यु उसके पश्चात् भी रूलाने वाली है, उसे रुद्र कहते हैं। क्योंकि रुद्र भी उसी को कहते हैं, जो रूलाने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, महात्मा जमदग्नि के यहाँ, बेटा! पारेत्वर ऋषि महाराज की अध्यक्षता में, वह सभा हुई थी और उस सभा में मुनिवरो! देखो, नाना ऋषिवर, अपने में विचार-विनिमय करने लगे, जिसमें बेटा! देखो, चाक्राणी गार्गी भी विद्यमान थी और महर्षि प्रवाहण और महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, सोमकेतु और देखो, भारद्वाज मानो देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारी सुकेता और भी नाना जैसे देवर्षि नारद और देखो, महर्षि पिप्पलाद मुनि इत्यादियों को एक समाज एकत्रित हुआ, और इस एकत्रित हुये समाज में, बेटा! देखो, महर्षियों ने यह अपना वर्णन किया, कि महर्षि वैशम्पायन भी विद्यमान थे। तो मेरे पुत्रो! देखो, यह एक प्रसङ्ग, उन्होंने एक वेद का मन्त्र,

महर्षि ने अपना एक वेद मन्त्र का उद्‍गीत गाया, और महात्मा जमदग्नि ने यह कहा, **मृत्युञ्जं ब्रह्मा कृतं देवत्त्वं ब्रव्हा वसुन्धरं देवतवम् ब्रह्मा लोकाः** मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह कहा कि प्रभु! एक वेद मन्त्र का उद्‍गीत गाने के लिये मैं उपस्थित हुआ हूँ, और मैंने यह वेद मन्त्र गाया है और भी इस प्रकार के अनन्य वेद मन्त्र है, यह वेद मन्त्र यह प्रश्न करता है कि संसार में मृत्यु क्या है? बेटा! मृत्यु के सम्बन्ध में ये प्रसङ्ग आया, कि मृत्यु है क्या? जो संसार में मानो देखो, एक-दूसरे को रूलाती रहती है, यह अज्ञान में आवृत्ति है क्या है?

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि-मुनियों का एक वेद मन्त्र के ऊपर विचार-विनिमय होने लगा, तो ऋषि मुनि अपने में मौन हो गये, परन्तु चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और उन्होंने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओ! यदि तुम्हारी आज्ञा हो, तो मैं अपना मन्तव्य प्रगट करूँ। मेरे प्यारे! महात्मा अश्वल ने कहा, कि अवश्य करो। तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी ने कहा, कि हे प्रभु! मेरे विचार में तो यह आता है कि शरीर और आत्मा का, दोनों का पृथक्-पृथक् हो जाना ही संसार में मृत्यु मानी जाती है। मेरे प्यारे! आत्मा इस शरीर को, पञ्चमहाभूतों के लोक को त्याग देता है, और यह अमृतं चेतना है, यह अपने मानो कर्म बन्धन को ले करके, मानो शरीर को त्याग देता है, इसका नाम मृत्यु है।

महर्षि पिप्पलाद मुनि जी का निर्णय

इतने में बेटा! महर्षि अमृतं देखो, पिप्पलाद जी ने यह कहा कि हे देवी! यह तुम्हारा वाक्य तो बड़ा प्रिय है, परन्तु यह मृत्यु शब्द नहीं बनता है, क्योंकि मृत्यु यदि शरीर भी, ज्यों का त्यों है और आत्मा भी ज्यों की त्यों है, एक-दूसरे का पृथक्-पृथक् हो जाना, मृत्यु नहीं बनता। मेरे प्यारे! चाक्राणी ने कहा प्रभु! मेरे विचार में तो ऐसा ही आता है। तो अपने में मौन हो गई, और इतने में महात्मा अश्वल ने यह कहा, कि वास्तव में इसका नाम मृत्यु नहीं है। उन्होंने कहा, तो महाराज! मृत्यु क्या है? तो उन्होंने पिप्पलाद मुनि से यह कहा, कि प्रभु! आप अपना कुछ मन्तव्य दीजिये। तो उस समय महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुये, पिप्पलाद जी ने कहा, कि संसार में, मेरा विचार तो ऐसा है, इस

प्रकार का वेद मन्त्र कहता है, **यम भवं ब्रह्मा मृतं ब्रहे अभावं असुतम् ब्रहे कृता,** वेद का ऋषि कहता है, मेरे विचार में तो यह आता है कि संसार में तो मृत्यु का अभाव है, मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने यह निर्णय दिया, तो महर्षि प्रवाहण जी उपस्थित हो करके बोले, क्या हे प्रभु! जब यह मृत्यु नहीं है, तो संसार रूदन क्यों कर रहा है? यह एक दूसरा मानव, मानव में वशीभूत हो करके ही मानो देखो, अपनी अजब्रहे प्रकाशाम् भूतं ब्रह्मा वर्ण यह मानो अपने में प्रकाश को नहीं दृष्टिपात कर रहा है। तो पिप्पलाद मुनि ने एक वेद मन्त्र का उद्गीत गाया और वह वेद मन्त्र से उच्चारण करने लगे **अमब्रहे देवम्ब्रहा वाचन्नमं अज्ञानाम भूतं कृत्ति देवाः** क्या हे ऋषियो! मेरे विचार में ये आता है, संसार में मृत्यु अज्ञान को कहते हैं, अन्धकार को कहते हैं। जहाँ अन्धकार है, अज्ञान है, वहीं मृत्यु माना गया है। शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है। क्योंकि जिस वस्तु का निर्माण होता है, उसका विच्छेद अवश्य होता है, क्योंकि विच्छेद का नाम मृत्यु नहीं कहा जायेगा, मृत्यु नाम अज्ञान का है। जो उसके भरण में मानो देखो, हम भृ हो जाते हैं, तो वह अमृतं ब्रह्मा मानो देखो, उसका नाम अज्ञान है, अज्ञान को जहाँ त्यागा, ज्ञान में प्रकाश हुआ, और **प्रकाश का नाम ही संसार में जीवन माना गया है।** जब मानव अपने में यह ग्रहण कर लेता है, क्या प्रभु के राष्ट्र में मृत्यु नहीं होती, प्रभु के राष्ट्र में अन्धकार नहीं होता, आलस्य नहीं होता, प्रमाद नहीं होता, जब राष्ट्र में प्रमादम् ब्रव्हे प्रभु के राष्ट्र में जब आलस्य और प्रमाद नहीं हैं, वहाँ अन्धकार रात्रि भी नहीं हैं, और जहाँ रात्रि नहीं है, वहाँ सदैव प्रकाश रहता है, प्रकाश का नाम जीवन माना गया है।

मेरे पुत्रो! ऋषि ने इस प्रकार अपना वाक्य प्रगट किया, तो ऋषिवर मौन हो गये, अपने में विचार-विनिमय करने लगे, परन्तु प्रश्नों की बौछार भी करने लगे। अश्वल ने कहा कि हे प्रभु! यह तो हमने स्वीकार कर लिया, परन्तु यह विचारों में नहीं आ रहा है। उन्होंने कहा कि विचारों में तो आना ही नहीं हैं, जब तक अज्ञान रहेगा और जब ज्ञान और ज्ञानरूपी प्रकाश का उदय हो जाता है,

और विवेक की, उसकी पुट लग जाती है, तो यह हमारे मानो क्रियाकलापों में आना प्रारम्भ हो जाता है। जब बेटा! ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया।

महर्षि पिप्पलाद मुनि और पत्नी का सम्वाद

मेरे प्यारे! सन्ध्या का काल हो गया, ऋषि मुनि सब अपनी-अपनी सन्ध्या में मानो विद्यमान हो गये, वे ध्यानावस्थित हो गये और पिप्पलाद मुनि ने यह विचारा, कि मुझे बहुत समय हो गये हैं, गृह को त्यागे हुये, मैं अपने गृह में अपना वास करूँगा, रात्रि काल में। तो बेटा! महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुये जैसे अपने गृह में उन्होंने प्रवेश किया तो मुनिवरो! देखो, उनकी पत्नी व्याकुल थी उन्होंने कहा देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो, शकुन्तका! उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं इसीलिये व्याकुल हो रही हूँ, क्योंकि मेरा एक सात वर्षीय पुत्र था, वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। मेरे प्यारे! महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले, कि देवी! तुम्हें यह प्रतीत है कि मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से, मेरा आगमन हो रहा है, और मैं यह निर्णय करता रहता हूँ, कि मृत्यु संसार में कोई वस्तु नहीं है, और तुम मृत्युञ्जय बनने के लिये, मानो मैं तुम्हें उपदेश देता रहता हूँ, और तुम उसके पश्चात् भी तुम मृत्यु को ही पुकार रही हो।

शरीर कहाँ चला जाता है

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि देवी ने कहा हे प्रभु! यह तो मैंने स्वीकार कर लिया कि मृत्यु कोई वस्तु नहीं, आपका यह निर्णय है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब अमृतं ब्रह्मा देखो, यह जो मेरा शरीर है, यह शरीर मङ्गलम् ब्रह्मे वणरसुता मानो यह अमृत को नहीं है, तो यह शरीर रूप कहाँ चला जाता है? जब आत्म ब्रह्मा तो वेद का ऋषि कहने लगा हे देवी! संसार में यह जो तुम्हारा शरीर है, यह जब कहाँ चला जाता है? कहाँ रहता है? मानो देखो, परमाणुओं का यह सङ्घात है, परमाणुओं से इसका निर्माण होता है, और वह निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता है। परन्तु देखो, यह परमाणु जैसे देखो, जरायुज होता है, सूक्ष्म शरीर होता है, परन्तु वह युवा होने लगता है। यह मानो पञ्चमहाभूतों के जो परमाणु

हैं, यह अपनी-अपनी आभा में रत्त हो करके, युवात्व में प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु उसी में यह रत्त रहने वाला जगत है।

पञ्चमहाभूतों के लोक में निवास

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! यह भी मैंने स्वीकार कर लिया। परन्तु जब यह परमाणुवाद नहीं होता, इस प्रकार का मानो शरीर नहीं होता, तो मानो यह परमाणु कहाँ रहता है, जिन परमाणुओं का यह सङ्घात है? ऋषि ने कहा हे देवी! यही परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान है। मानो माता के गर्भ में एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है, और वह जो शिशु है मानो देखो, जब वह माता के गर्भस्थल में प्रवेश करता है। तो देवताओं में एक जागरूकता प्रगट हो जाती है, और देवता अपनी-अपनी देवनगरियों से अपना साकल्य ले करके, शिशु की रक्षा करते रहते हैं क्या, जैसे मानो तुम्हें प्रतीत है, चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है, वायु प्राण देता है, मानो देखो, अन्तरिक्ष अवकाश में रहता है। अमृतं ब्रह्मा देखो, जो पृथ्वी गुरूतव देना प्रारम्भ करती है, अग्नि उष्ण बनाने लगती है, तो इसी प्रकार मानो यह जो पञ्चमहाभूतों का यह जो लोक है, इस लोक में शिशु विद्यमान रहता है, और देवताजन उसकी रक्षा करने के लिये तत्पर हो जाते हैं, रक्षा करते रहते हैं। वह अपने शरीरों को प्राप्त होता रहता है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने यह कहा और निर्माण करने वाला निर्माण करता है, जब निर्माण करने वाला निर्माण करता है, तो बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार, दो सौ दो नाड़ियाँ का निर्माण करता है। मेरी भोली माता को यह प्रतीत नहीं, कौन निर्माण कर रहा है, बेटा! कहीं मानो देखो, बुद्धि का निर्माण है। मनस्तत्त्व है, और यह मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु होने से उससे सूक्ष्म बुद्धि है। मेरे प्यारे! देखो, **मनस्तत्त्व, बुद्धि के चार प्रकार माने गये हैं** अवान्तर भेदन माने गये हैं परन्तु चार देखो, मुख्य रूप से बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी। मेरे प्यारे! देखो, **बुद्धि कैसे यह दृष्टि बनी हुई है। मेधा, जब उसका प्रयोग करती है, उसी के अनुसार जीवन बनता है, ऋतम्भरा, जो जान करके मौन हो जाती है, और प्रज्ञा उसे कहते हैं जहाँ परमात्मा का उसे दर्शन होता है। विवेक की**

जागरूकता, प्रबलता को प्राप्त होने लगती है। तो इस प्रकार मानो यह चार प्रकार की बुद्धियों का वर्णन है। कहीं मानो देखो, हृदय भी दो प्रकार के निर्माणित हैं, एक शरीर के मध्य में है, और द्वितीय जो हृदय है वह लघु मस्तिष्क में रहता है, तो मानो देखो, यह परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ, यह मानवीय शरीर है। जहाँ देवता अपने-अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहते हैं, और उन्हीं क्रियाकलापों में मानव अपने में रत्त हो जाता है। तो हे मेरे अमृतम्! हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है, क्या जो भी मानो देखो, क्रियाकलाप कर रहा है, नाना प्रकार के मस्तिष्कों का निर्माण करता है, जैसे लघु मस्तिष्क है, रेण मस्तिष्क है, सम्भूति मस्तिष्क है, जहाँ वह लोक-लोकान्तरों का दर्शन करता हुआ परमात्मा के ब्रह्माण्ड को जानता है। तो इस प्रकार देखो, अपने में विज्ञानवेत्ता बन करके, एक अणु दूसरे अणु में प्रवेश होता हुआ, दृष्टिपात करता है।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार यह परमात्मा की रचना का यह निमित्त है, इसीलिये वह रचियता है, मेरी भोली माता तेरे गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है। परन्तु तुझे निर्माणवेत्ता का प्रतीत नहीं है, कौन निर्माण कर रहा है, कैसे निर्माण हो रहा है, अमृत कौन दे रहा है, प्रकाश कहाँ से आ रहा है, गुरुत्व कहाँ से आ रहा है, देखो, पिण्ड का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो, यह दस प्राण हैं, प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान और नाग, देवदत, धनञ्जय, कुरु और कृकल यह दस प्राण माने गये हैं। इन्हीं प्राणों के आधार पर यह शरीर मानो क्रियाशीलता में परणित हो रहा है। हे माँ! तुझे यह प्रतीत नहीं है, कौन निर्माणवेत्ता है, वह प्रभु तेरे कितना निकट है, तेरे गर्भस्थल में निर्माण कर रहा है, परन्तु निर्माणवेत्ता का कोई प्रतीत नहीं होता। तो मेरे प्यारे! देखो, उस परमपिता परमात्मा की महती में मैं विशेष जाना नहीं चाहता हूँ, विचार-विनिमय क्या, जब पिप्पलाद मुनि ने अपना यह निर्णय दिया, तो शकुन्तका ने कहा प्रभु! यह भी मेरे विचार में आ गया है।

वीरत्व वीराङ्गना रूप

भगवन्! मैं यह जानना चाहती हूँ, क्या मानो माता के गर्भस्थल में शिशु भी नहीं होता, तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? तो उस समय उन्होंने कहा हे

देवी! जब माता का गर्भाशय नहीं होता, तो यही परमाणुवाद मानो देखो, कुछ वीरत्व के रूप में होता है। कुछ वीराङ्गना के रूप में होता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपना मन्तव्य देते हुये कहा, क्या वीराङ्गना जब इनकी रक्षा करती है, परमाणु की तो वह वीरत्व वीराङ्गना ब्रव्हे व्रतम् देखो, वीरङ्गात्व को प्राप्त हो करके और अपने में मानो निर्भय सदन बना लेती है। विचार-विनिमय क्या बेटा! मुझे चाक्राणी गार्गी का जीवन स्मरण आता रहता है, जब वे वेदों का गान गाने लगती, तो बेटा! देखो, सिंहराज और सर्पराज उनके चरणों की वन्दना करते रहते थे। कितना अहिंसामय जीवन बन जाता है, क्योंकि यह ब्रह्मचर्य ही, संसार में ब्रह्म और चरि के दो शब्द होते हैं। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को, जो इन दोनों को अङ्गों और उपाङ्गों से जान करके इसी के अनुसार मानो अपने जीवन में क्रियाकलाप बना लेता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह महानता को प्राप्त हो जाता है, और वह ब्रह्मचरिष्यामि बन करके ब्रह्म को प्राप्त होने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार मेधाम् भूत् देखो, वह वीराङ्गना कहलाती है।

आत्मा विष्णु स्वरूप

मेरे प्यारे! इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मचारी पितर कहलाता है, मानो वह ब्रह्मचरिष्यामि जो देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है। वे देवत्त्व को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! जो पितरों से भी ऊर्ध्वागति में रमण करने लगता है, तो विचार आता है मुनिवरो! देखो, वह वीरत्व को प्राप्त होता हुआ, वह वीरत्व में परमाणु विद्यमान होते हैं। मेरे प्यारे! उनकी रक्षा करने वाला देवता बन जाता है, और देवत्त्व को बन करके आत्मा को विष्णु बनाता है, और विष्णु कैसे बनाता है? मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुये कहा है कि विष्णु नाम बेटा! परमात्मा का है। विष्णु आत्मा को कहते हैं, आत्मां भूतम विष्णुं ब्रह्मा देवाः। मेरे प्यारे! जैसे यज्ञ का नाम विष्णु है, इसी प्रकार आत्मा का नाम भी विष्णु है। जब यह मानो देखो, अक्षय क्षीर सागर में विष्णु विद्यमान होता है, तो नारद अपनी वीणा को ले करके शान्तम् ब्रहे देखो, वीणा में ध्वनि करने लगता है। गन्धर्व गान गाने लगता है।

वैदिक साहित्य में आया है, क्या मुनिवरो! देखो, **नारद नाम मन का है,** क्योंकि मन अपनी वीणा को ले करके चञ्चल रूपी वीणा को ले करके वह चञ्चलता को त्याग देता है। स्वरों में परणित हो जाता है और **गन्धर्व नाम बुद्धि का है,** यह अपना गान गाने लगती है, और मुनिवरो! देखो, वह महान् बन करके अक्षय क्षीर सागर में रहता है। **अक्षय क्षीर नाम ज्ञान का, विवेक का है** उसमें आत्मा प्रवेश कर जाता है, अष्ट चक्र और नौ द्वारों के माध्यम से यह सर्वत्रता को जान करके ब्रह्माण्ड को बेटा! अपना खिलवाड़ बना लेता है और बह्माण्ड का दर्शन करने लगता है। मेरे प्यारे! वह योगेश्वर बन करके ब्रह्मणं ब्रह्मा वह विष्णु की उपाधियों को प्राप्त हो जाता है। तो विचार आता रहता है, वह विष्णु आत्मा जिसके चरणों में लक्ष्मी ओत-प्रोत होती है और वह अक्षय में, ज्ञान के सागर में, विवेक में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, **आत्मा विष्णु है,** इसीलिये देवी! परमाणुओं की रक्षा करने वाला, अपने में वीरत्व को प्राप्त हो करके अपनी आभा को परणित हो जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना उद्‌गीत गाया, तो देवी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा प्रभु! यह तो मैंने जान लिया अच्छी प्रकार, परन्तु मेरा कुछ प्रश्न बना रहा। उन्होंने कहा देवी! उच्चारण करो। उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह जानना और चाहती हूँ, क्या जब यह वीराङ्गना और वीरत्व भी नहीं होता, तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन्! उन्होंने कहा देवी! जब वीरत्व और वीराङ्गनात्व नहीं होता, तो मानो यही परमाणुवाद अन्न में विद्यमान रहता है।

सात प्रकार का अन्न

जब सृष्टि के पिता ने देखो, सृष्टि का सृजन किया, तो सात प्रकार के अन्न को उन्होंने उत्पन्न किया, सबसे प्रथम अन्न का नामं ब्रह्मे बेटा! एक ही पौधा है, उस पर **दो प्रकार का अन्न** विद्यमान है। एक अन्न को मानव पान कर रहा है, और दूसरे अन्न को मुनिवरो! देखो, पशु पान कर रहा है। पशु पान करता है, तो वह दुग्ध देता है, पय देता है, और मानव पान करता है, तो ओज और तेज की उत्पत्ति करता है। मेरे पुत्रो! देखो, कैसी प्रभु की रचना है। अरे! एक ही पौधा

है, उस पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है, एक अन्न को मेरे प्यारे! माता भोजनालय में तपाती है, एक अन्न को गौ नाम का पशु पान कर रहा है, वह दुग्ध दे रहा है, पय दे रहा है। यह कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का ब्रह्माण्ड है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, मेरी प्यारी माता गायत्री छन्दों का पठन-पाठन करती हुई, जब अपने पुत्र को भोज्य कराती है, तो उसकी मनोनीत इच्छा यह होती है, क्या अन्न में मेरे परमाणु निहित हो जायें, अन्न में मेरे हृदय की तरङ्गें चली जायें। क्या मेरा पुत्र ब्रह्मवेत्ता बन जाये, ज्ञानी बन जाये, मृत्युञ्जय बन जाये, ऐसी माता की पवित्र अवृत्ति भावना होती है। मेरे प्यारे! देखो, मानव अपने में विचारता रहता है, यह अन्नाद कहलाता है, तो यह दो प्रकार का अन्न है, एक को पशु पान कर रहा है, एक को मानव पान कर रहा है।

हुत

मेरे प्यारे! **तीसरा जो अन्न है,** उसे हुत कहते हैं, आहुति देना – यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है, नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित करता हुआ, श्रद्धामयी घृत को ले करके बेटा! वह हुत कर रहा है, और अग्नि के मुखारबिन्दु में वह कहता है, प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः कह करके बेटा! उसमें हुत कर रहा है। क्योंकि प्राण ही तो भोगतव्य है, प्राण ही तो आहार करने वाला है। प्राण ही मेरे प्यारे! देखो, उसे क्षुधा की वृत्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यजमान अपनी यज्ञशाला में कहता है, हे दिव्याम् भतम् ब्रह्मा हे दिव्या! आओ, हम देवताओं को अग्नि के मुखारबिन्दु में – अग्नि देवताओं का दूत है, अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है, और अग्नि में हम हुत करने वाले बनते हैं। जिससे देवता प्रसन्न हो जायें, और यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाये। नाना प्रकार का अन्नाद देने लगे, क्योंकि जब देवता प्रसन्न होंगे, तो मानो देखो, समुद्रों से जलों का उत्थान होगा, जल से मेघ मण्डलों की उत्पत्ति होगी, और यही जल से ही इन्द्र अपना प्रसन्न हो करके अपनी शचि की आज्ञा पा करके, बेटा! देखो, अपने प्राण रूपी वज्र से वत्रासुर का विनाश करके, धीमी-धीमी वृष्टि कराता है, और

वही मुनिवरो! नाना प्रकार के अन्न का मूल बन जाता है। तो विचार आता है ऋषि कहता है, हे देवी! ब्रह्मणा देखो, यह तीसरे प्रकार का अन्न है जिसको मानो देखो, अग्नम् ब्रहे अग्नि के मुखारबिन्दु में हुत करना, वायुमण्डल को पवित्र बनाना और देवता उससे प्रसन्न हो करके प्रदूषण को समाप्त कर देते हैं।

प्रहुत

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, उन्होंने कहा यह तीन प्रकार का अन्न और **चतुर्थ अन्न** मानो देखो, प्रहुत माना गया है। हमारे यहाँ जिस समय यह विधान था, भगवान् मनु ने राष्ट्रीय समाज का निर्माण किया और विभाजन किया, समाज का तो उन्होंने पुरोहित का वर्णन करते हुये कहा है, क्या प्रहुत अवश्य होना चाहिये। प्रत्येक नगर में, प्रत्येक गृह में मानो देखो, पुरोहित अपना पराविद्या का ज्ञान दे करके गृह को ऊँचा बनाएँ। मेरे प्यारे! गार्हपत्य नाम की अग्नि का चयन हो जाये। इसी प्रकार उन्होंने कहा कि **आं भूतं ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मा कृतो देवत्वाम् ब्रहो** मेरे प्यारे! ऋषि कहता है, क्या मुनिवरो! भगवान् मनु ने यह वर्णन किया क्या हमें अपने में पुरोहितों की रक्षा करनी चाहिये। **पुरोहित कहते हैं बुद्धिमान को जो पराविद्या के देने वाला है, जिससे राष्ट्र और समाज का कल्याण हो जाये।** जैसे बेटा! देखो, विश्वामित्र ने त्रेता के काल में धनुर्याग किया था, और धनुर्याग में दौ सौ पिच्चासी ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, और अध्ययन करके चारों राजकुमारों को ले करके धनुर्विद्या का उन्होंने अभयस्त करा करके क्योंकि धनुर्यागाम् भूतम् ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, उसी से राष्ट्र ऊँचा बनता है। समाज ऊँचा बनता है। तो वह पुरोहित कहलाते हैं, जो निष्पक्ष अपने क्रियाकलापों में रत्त रहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया अमृतं देखो, चौथा जो अन्न है, वह प्रहुत है। प्रहुत और हुत और दो प्रकार का अन्न मानो एक पशु का अन्न है, यह चार प्रकार के अन्न देखो, सबका साझा अन्न कहलाता है। यह सबका साझा अन्न है, इसमें पशु भी, प्राणी भी सब इस अन्न को पान करके प्रसन्न होते हैं।

मोक्ष की पगडण्डी

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा यह चार प्रकार का अन्न है और **तीन प्रकार का अन्न आत्म कल्याण के लिये होता है।** मेरे प्यारे! देखो, मन, कर्म, वचन मङ्गलं ब्रह्माकृतं देखो, सबसे प्रथम वह अपने में मानो देखो, वचनम् ब्रव्हा कृतं देवत्त्वां मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार का जो अन्न है – तो मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों से पान किया जाता है। जो श्रोत्रों से पान किया जाता है। जो मेरे प्यारे! देखो, वह अमृतं घ्राण के द्वारा पान किया जाता है। तो यह तीन प्रकार का अन्न बेटा! अपने आत्म कल्याण के लिये है, अरे! मानो देखो, मन जब ऊर्ध्वा में चिन्तन करने लगेगा, तो यह आत्मा का भोजन बन करके रहेगा। जब नेत्रों से सुदृष्टिपान करने लगोंगे तो मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु से पार हो जायेंगे, और जब तुम घ्राणेन्द्रियों को तुम पवित्र शब्दों को अध्ययन में लाओंगे, श्रवण करोंगे, तो तुम्हारी देखो, यह श्रोत्र इन्द्रियाँ भी मृत्यु से पार हो जायेगीं। और तुम मानो इसी प्रकार घ्राण के द्वार सुगन्ध लेना प्रारम्भ करोगे, तो वह भी मृत्यु से पार हो करके साकल्य को एकत्रित करके जब तुम हृदय रूपी यज्ञशाला में याग का प्रारम्भ हो जायेगा। तो तुम्हारा हृदय पवित्र हो जायेगा, और हृदय का सम्बन्ध है – परमपिता परमात्मा से हृदय से जब समन्वय हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, तो मानो देखो, मानव अपनी हृदय अग्मयता को प्राप्त होने लगता है, तो बेटा! यह तीन प्रकार का भोजन जिससे आत्मा पवित्र बनता है, वह घ्राण के द्वारा, श्रोत्र के द्वारा और मन के द्वारा मन देखो, जब विषय विचार तुम्हारा जीवन एक महानता में परणित हो जायेगा, क्योंकि मन कर्म और विचार इन तीनों देखो, तीनों का साकल्य बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में जब याग अपने में जान जाते हो, तो योगी बन जाओंगे, परमात्मा का दर्शन करने लगोंगे, परमात्मा की सृष्टि को सदैव निहारने लगोंगे। तो बेटा! देखो, यह सात प्रकार का अन्न सृष्टि के पिता ने, परमपिता परमात्मा ने यह सृष्टि के सृजन हार ने सात प्रकार के अन्न को सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया। जिससे बेटा! मानव जब अन्नों को जान लेता है, और निष्ठावान बनता है, तो यही अन्न मानव को देव लोक में पहुँचा देते हैं। यही मानो देखो, मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करा देते हैं, तो

विचार आता रहता है कि हम सात प्रकार के अन्न के ऊपर, हम अपना विचार-विनिमय प्रारम्भ करें। इस सात प्रकार के अन्न को जो मानव जानता है, वह उसको देखो, दूषित परमाणु नहीं निगलता है, उसे प्रदूषण उसके निकट नहीं आता है। वह हृदय अग्मयता को प्राप्त हो करके अपने हृदय में ही मग्न हो करके परमात्मा के हृदय से अपने हृदय का मिलान कर लेता है।

परमाणु का परमाणु में विलय

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार, जब ऋषि ने अपना वर्णन किया, तो देवी मौन हो गई, और देवी ने अन्त में एक प्रश्न किया, कि हे प्रभु! मैं यह और जानना चाहती हूँ, कि जब यह अन्न भी नहीं होता, तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? मेरे प्यारे! देखो, शकुन्तका के इन वाक्यों को पान करने के पश्चात् ऋषि कहते हैं, हे देवी! जब मानो देखो, यह सात प्रकार का अन्न भी नहीं होता तो यही परमाणु देखो, पञ्चमहाभूतों में रत्त रहते हैं। हे देवी! जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है, तो अग्नि के परमाणु अग्नि में सिमट जाते हैं, जल के परमाणु जल में सिमट जाते हैं, अग्नि के और अमृतं और अवृतम देखो, पृथ्वी के परमाणु पृथ्वी में रत्त हो जाते हैं, और मानो देखो, वायु, वायु में और अन्तरिक्ष, अन्तरिक्ष में और यह आत्मा अपने चित्त के मण्डल को ले करके चला जाता है। हे देवी! संसार में मैं यह जानना चाहता रहता हूँ, जब इस प्रकार मानो देखो, यह आत्मा का विनाश नहीं होता, और शरीर के जिन तत्त्वों से शरीर का निर्माण हुआ है, उसका भी अक्षय नहीं होता, तो देवी! संसार में मृत्यु क्या है? मेरे प्यारे! चाक्राणं ब्रह्मा देवत्त्वाम् ब्रह्मा शकुन्तका ने कहा प्रभु! आपको धन्य है, आपने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है। उन्होंने कहा देवी! जब तक मानो इस आत्मा के साथ में जब तक संस्कारों का समूह है, जब तक आवागमन बना रहेगा, जब तक चित्त के मण्डल में संस्कार विद्यमान हैं, **संस्कारों से विहीन होना ही मोक्ष का मार्ग है,** और अमृतम् ब्रह्मा देखो, यह जो शरीर है, पञ्च महाभौतिक वाला यह शरीर इस पञ्चमहाभूतों का देवत्त्व यह अपने-अपने रूपों में परणित हो जाता है। मेरे प्यारे! देवी ने कहा प्रभु! धन्य है। आपने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है, मैं किस अन्धकार में थी, प्रभु! तो मेरे प्यारे! ऋषि मौन हो गये।

मृत्यृ भी है

जब ऋषि अमृतं देखो, देवी भी मौन होने लगी। तो याज्ञवल्क्य ब्रह्मा व्रतम देखो, वह असुतम देवां अब्रीहि कृतम् देवाः ऋषि ने कहा, पिप्पलाद ने देवी! मृत्यु भी है। जब देवी ने यह कहा कि मृत्यु नहीं है, तो उन्होंने कहा मृत्यु भी है। उन्होंने कहा मृत्यु क्या है, भगवन्! मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने कहा कि जैसे राजा जनक की सभा में अर्द्धभाग ने ब्रह्मा देखो, याज्ञवल्क्य मुनि से यह प्रश्न किया क्या मृत्यु की मृत्यु क्या है संसार में? तो उन्होंने कहा था हे अर्द्धभाग! मत कहो हे अर्द्धभाग! मृत्यु की मृत्यु नहीं होती, अरे! **मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है,** जो ब्रह्म को नहीं जानता वह मृत्युञ्जय नहीं हो सकता। मेरे प्यारे! ऋषि ने यह कहा कि मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है अरे! ब्रह्म को जानने वाले की संसार में मृत्यु नहीं हुआ करती। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गया और उन्होंने कहा देवी! मृत्यु का यह विश्लेषण दिया, क्या मृत्यु की मृत्यु क्या है, ऋषि याज्ञवल्क्य ने कहा कि मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है, क्योंकि ब्रह्म को जो जान लेता है, ब्रह्म के राष्ट्र में बेटा! देखो, जो ब्रह्म के राष्ट्र में पहुँच जाता है। ब्रह्म के राष्ट्र में आलस्य नहीं होता, प्रमाद नहीं होता, और रात्रि नहीं होती, जहाँ आलस्य, प्रमाद और रात्रि नहीं होती वहाँ सदैव प्रकाश रहता है और जहाँ प्रकाश रहता है, वहाँ मृत्यु नहीं हुआ करती।

मेरे प्यारे! देखो, इतना वाक्य उच्चारण करके ऋषि मौन हो गये। देवी ने चरणों को स्पर्श किया और कहा धन्य है प्रभु! आपने मेरे अज्ञान को समाप्त किया है, आप तो महान् ज्ञानी हैं, पवित्र हैं। मैं कितनी सौभाग्यशाली हूँ, हे प्रभु! जो आप जैसे सखा मुझे प्राप्त हुये हैं, जो ब्रह्म ज्ञान में मुझे ले जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, आज मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसा हम पिप्पलाद मुनि के आश्रम में विद्यमान हों और वहाँ अपनी वार्त्ताएँ प्रगट कर रहे हों। तो बेटा! विचार-विनिमय क्या, वेद के ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया, उन्होंने कहा, कि मृत्यु का अभाव है, और मृत्यु मानो देखो, अपने में कोई वस्तु नहीं है। यह अज्ञान का नाम मृत्यु, अज्ञान को त्यागों और मृत्यु से पार हो जाओ।

मृत्युञ्जय बन जाओं। तो बेटा! यह महात्मा ने अपना निर्णय दिया, अपनी देवी से, मेरे प्यारे! देखो, पिप्पलाद मुनि ने कहा देवी! मैं इस प्रकार का अपना मन्तव्य देता रहता हूँ। अपने विचार देता रहता हूँ, विचारों पर आधारित, जब मानव अपने जीवन को बना लेता है, तो वह परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। तो वह प्रकाश में चला जाता है। तो यह आज का वाक्य, मैं अब अपने वाक्यों को विराम देने जा रहा हूँ।

आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुये, परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जायें और वेदज्ञं ब्रह्मा प्रकाशाम् मानो हम प्रकाश में सदैव रत्त हो जायें। तो बेटा! यह आज का वाक्य अब सम्पन्न होने जा रहा है, कल समय मिलेगा, तो शेष चर्चायें कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभयाम् मनु गायन्त्वा रथम् आपाऽम्।

वेद पाठ ....

महर्षि महानन्द मुनि जी—अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद-गुरुदेव—आनन्दित रहो!

दिनाँक : 20 सितम्बर, 1969

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं व अन्य महानुभावों द्वारा भेजी गई राशि के नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती है इसलिए सभी से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर भेजी गई राशि का विवरण देने का कष्ट करें—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 9810887207

॥ ओ३म् ॥

पूज्यपाद-गुरुदेव का निर्णय

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। एक समय अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वार पर विराजमान थे। नाना ब्रह्मचारी उनके समीप थे। वेदों का पठन-पाठन और अध्ययन प्रारम्भ हो रहा था। तो हमने पुनः प्रश्न किया कि भगवन्! संसार में मृत्यु और जीवन क्या है? तो पूज्यपाद गुरुदेव ने यह निर्णय कराया था **''हे पुत्रों ! यह जो मृत्यु है यह मानव के अपने ही तुच्छ कर्म अन्धकार बन करके मानव के समीप आ जाते हैं। अपने ही कर्म, अपनी आभा चेतना के द्वारा मानव महापुरुष कहलाते हैं।''** परमात्मा के समीप परमात्मा के चरणों में ओत-प्रोत हो जाना वह जीवन है और प्रकृति के अपवाद में रमण करना, उसको अपना ही जानकर उसका भोग करना मानो उसकी मृत्यु मानी जाती है।'' जब अपनी करके भोगोगे तो उसमें नाना प्रकार की त्रुटियाँ उत्पन्न हो जाएँगी। जितने भी अवगुण, जितने भी तुच्छ कर्म करता है वह अपने में ही स्वीकार करके करता है। यदि उसको समाज की सम्पदा से, परमात्मा की सम्पदा स्वीकार करोगे तो तुम्हारे जीवन में अन्धकार नहीं रहेगा। तुम्हारे जीवन में प्रकाश आ जायेगा और वह प्रकाश ही तुम्हारा जीवन है मृत्यु नहीं है। इसलिए हे मेरे प्यारे ऋषियों! मृत्यु को समीप आने ही न दो, मृत्यु तुम्हारे लिए कोई वस्तु नहीं है। मृत्यु तो उनके लिए है जो इस संसार की नाना सम्पदा को अपना करके भोगते हैं।

एक मेरी प्यारी माता व्याकुल हो रही है, पुत्र के वियोग में व्याकुल है और पुत्र ही पुत्र पुकार रही हैं। जब मैं यह प्रश्न करता हूँ कि हे माँ! तू इतनी व्याकुल क्यों हो रही है? तो वह कहती है कि मेरा पुत्र नहीं रहा। जब मैं यह जानना चाहता हूँ कि माँ ! तेरा जो पुत्र था आत्मा था या पञ्चमहाभूत – जब यह प्रश्न करते हैं तो माता मौन हो जाती है। माता यह नहीं जानती। माता को कर्त्तव्य का पालन दिया कि तुम इसकी पालना कर सकती हो, मृत्यु

शरीर को विच्छेद नहीं करती। माँ! तू पालन ही तो कर सकती है, पालन करना तेरा कर्त्तव्य था। परन्तु पालन करके यह तेरी सम्पदा तेरी नहीं, परमात्मा की और समाज की सम्पदा उसको प्राप्त हो गई। जब यह विचार आता है तो ज्ञान के चक्षु खुल जाते हैं। मानो उसका स्पष्टीकरण हो जाता है और माता अपने लिये अनुभव करती है कि वास्तव में वाक्य तो यथार्थ है। मेरे प्यारे वह प्रकाश की अनुभूति कर रही है। परन्तु जब अन्धकार में जाती है, पुत्र की ममता में परणित है वह पञ्चमहाभूत जिनसे वह निर्माण हुआ वह भी माता का नहीं प्रभु की सम्पदा है और आत्मा भी प्रभु का हृदय है तो व्याकुलता किस वस्तु की है? जब ये विचार प्रत्येक मानव के हृदय में ओत-प्रोत हो जाते हैं तो मानव का हृदय विभोर हो जाता है, अज्ञान समाप्त हो जाता है। यही अनुभव में आ रहा है कि संसार में प्रकाश रहना चाहिए, अन्धकार नहीं रहना चाहिए। **'अन्धकार मृत्यु है और प्रकाश जीवन है।'** इसलिये प्रकाश को पान करने का प्रयास करो। यह है आज का वाक्य, अब विशेष चर्चा मैं प्रकट करना नहीं चाहता। **प्रत्येक मानव को व्याकुल न रह करके परमात्मा के आँगन में आनन्दित रहना चाहिए।** प्रत्येक वस्तु में परमात्मा गुँथा हुआ है। कण-कण में व्याप्त है। उसे सर्वत्र विराजमान अपने में स्वीकार करते हुए परमात्मा की आभा को विचारो।

पूज्यपाद-गुरुदेव

आवश्यक सूचना

सभी वार्षिक सदस्यों को सूचित किया जाता है कि जिन सदस्यों ने अभी तक वार्षिक सदस्यता की राशि जमा नहीं की है वह कृपया करके मनीआर्डर द्वारा समिति के कार्यालय में या प्रकाशन मंत्री को वार्षिक सदस्यता की राशि भेज दें जिससे कि पत्रिका निरंतर प्रेषित होती रहे।

॥ ओ३म् ॥

ऋषि-मुनियों का महाराजा जाह्लवी से सम्वाद

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब महाराजा जाह्लवी अपने आसन पर विद्यमान हैं परन्तु देखो ब्राह्मण समाज यह उच्चारण करता है चलो राजा जाह्लवी के द्वारा ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करेंगे। तो मुनिवरो! देखो वह महाराजा जाह्लवी के आश्रम को नाना ब्राह्मण, वेद के जिज्ञासु वह महर्षि राजा जाह्लवी के द्वार पर पहुँचते हैं। जाह्लवी राजा मनु वंश में हुआ है। महाराजा जाह्लवी के समीप जब नाना ब्राह्मण पहुँचे, तो ब्राह्मणों ने यह विचारा, ऋषियों ने कि हम इनको मन ही मन में प्रणाम कर लेते हैं, हम मन ही मन में नमस्कार कर लेते हैं परन्तु जब तक हमें यह प्रतीत न हो कि यह राजा ब्रह्मज्ञानी है अथवा नहीं है। तो उन ऋषियों में से मुनिवरो! देखो ब्राह्मणों में एक ब्राह्मण की चुनौती हुई, ब्राह्मण को निर्वाचन किया और यह कहा कि तुम इस राजा से यह प्रश्न करो और राजा इसका क्या उत्तर देगा और उसके मस्तिष्क को दृष्टिपात करो कि वह वास्तव में ब्रह्मवेत्ता है या नहीं।

प्रातःकाल के याग की समिधा

मुनिवरो! कहा जाता है कि उनमें से महाराज वरुण, महर्षि वरुण ने महर्षि गौतम के पिता ने महाराज जाह्लवी के मस्तिष्क को दृष्टिपात करके यह कहा कि महाराज तुम जो प्रातःकाल याग करते हो वह कितनी समिधाओं से करते हो? तो मुनिवरो! देखो उस समय महाराजा जाह्लवी कहते हैं कि जो याग किया मैंने प्रातःकाल में वह तीन प्रकार की समिधा थीं, वह तीन समिधाओं से मैं याग करता हूँ। **वह तीन समिधा क्या हैं?** महाराजा जाह्लवी कहते हैं कि तीन जो समिधा है वह तीन समिधा जिससे मैं अग्न्याधान करता हूँ, अग्नि को प्रदीप्त करता हूँ वह तीन प्रकार की समिधा मेरे यहाँ ज्ञान, कर्म और उपासना कहलाई जाती हैं। वाह रे राजन्! राजा जाह्लवी क्या उत्तर देते हैं ऋषि को कि मैं अपने हृदय में उन अग्नियों को

उद्‌बुद्ध कर रहा हूँ और प्रातःकाल में उद्‌बुद्ध करता हूँ, उन्हीं अग्नियों से मैं याग करता रहता हूँ, उसी बाह्य जगत् में याग करता हूँ, तीन समिधाओं से याग करता हूँ। तीन समिधा क्या हैं? ज्ञान, कर्म और उपासना के ऊपर चिन्तन प्रारम्भ रहता है। परन्तु उन्हीं को बाह्य जगत् में जाता हूँ तो अग्न्याधान करता हूँ, वह काष्ठ की तीन समिधा ले करके वह तीन ही क्यों मानी जाती हैं? क्योंकि वह त्रैतवाद को मुझे जागरूक बनाना है। मेरे हृदय में जो तीनों गुण हैं रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण यह तीन समिधा को ले करके मैं अग्न्याधान करता हूँ। इसलिए कर रहा हूँ कि बाह्य जगत् भी मेरा यह लोक-परलोक यह त्रीवर्द्धम्, त्रीव्रतों में मेरा यह संसार पवित्र बन जाए। मैं राष्ट्र को तीन विभाग में विभक्त करना चाहता हूँ। ब्राह्मण, क्षत्रीय और वैश्य और शूद्र एक शूद्र को मैं नहीं ले रहा हूँ, तीनो विभागों में मैं अपने राष्ट्र का मैं अपनी प्रजा को एक सूत्र में लाना चाहता हूँ। इस प्रकार का विचार जब मुनिवरो! देखो राजा ने महाराजा जाह्लवी ने दिया तो ब्रह्मवेत्ताओं को, जिज्ञासुओं को प्रतीत हो गया कि राजा तो ब्रह्मवेत्ता है, और ब्राह्मण है।

मुनिवरो! उनके समीप विद्यमान हो गए और यह कहा कि महाराज हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि यजमान तीन से याग कर रहा है वह तीन आपने प्रथम कैसे कहा था कि मैं ज्ञान, कर्म और उपासना के द्वारा याग कर रहा हूँ। ज्ञान, कर्म और उपासना में क्या-क्या दोनों में अन्तर्द्वन्द्व माना गया है। राजा कहते हैं कि ज्ञान कहते हैं इस संसार के प्रत्येक पदार्थ का ज्ञान हो जाना और प्रत्येक पदार्थ को ज्ञान में लाना ही उसकी मुझे एक समिधा बनानी हैं, समिधा का अभिप्राय यह है जो अग्न्याधान हो करके अग्नि में भस्म हो जाती है। वह जो मेरा विचार है, मेरा जो सँकीर्णवाद है, वह व्यापक बन करके वह ज्ञान में परणित हो जाए, ज्ञान में आभाहित हो जाए, ज्ञान और विज्ञान होगा तो मैं कर्मकाण्ड की पगडण्डी को जान सकता हूँ। कर्मकाण्ड में मेरी निष्ठा हो जाए, कर्मकाण्ड में मैं आभा में निहित हो जाऊँ तो वह मेरी उज्ज्वल समिधा है। ज्ञान, कर्म और उपासना उसके पश्चात् परमात्मा को अपने को समर्पित कर सकता हूँ, परमात्मा को समर्पित

करना बहुत अनिवार्य है। जिस प्रकार माता अपने बालक को गर्भस्थल में धारण करती हुई अपने को बालक में रत्त कर लेती है, इसी प्रकार देखो मैं अपने को रत्त करना चाहता हूँ। वह तीन समिधा हैं, समिधा का अभिप्राय यह कि मेरी अन्तिम जो समिधा है मेरे शरीर और विचारों की समिधा बन करके वह अग्न्याधान जब परमात्मा ब्रह्म को प्राप्त होती चली जाएँ, ब्रह्म में निष्ठित हो जाऊँ ऐसा विचार वह दे रहा था।

राष्ट्र को ऊँचा बनाने वाली तीन समिधा

परन्तु आगे ब्राह्मणों ने कहा कि प्रभु वह तीन प्रकार की समिधा कौन-सी हैं जिनसे यह राष्ट्र ऊँचा बनता है, राष्ट्र को भव्य बनाया जाता है। उस समय राजा ने कहा कि तीन प्रकार की समिधा वह कहलाती हैं जो राष्ट्र को ऊँचा बनाती हैं। सबसे प्रथम जिसमे चटाचट होती हो, जिसमें चरणिन्त होती हो, उसका अभिप्राय यह कि मेरे राष्ट्र में बुद्धिमान विशेष हों और बुद्धिमान के द्वारा यह राष्ट्र, समाज ऊँचा बनता है। जब बुद्धिमान जिस भी काल में होते हैं, जिस गृह में बुद्धिमान पुरुष होते हैं उस राजा का राष्ट्र पवित्र होता है। परन्तु इसी प्रकार मेरी वह प्रारम्भ की जो समिधा है उससे ही मैं अपने राष्ट्र में ब्राह्मणों को ओजस्वी बनाता हूँ। मुनिवरो! देखो राजा जाह्लवी कहते हैं कि मेरे यहाँ एक समय ब्रह्मवेत्ता स्वर्णकेतु ऋषि महाराज आए और स्वर्णकेतु ऋषि महाराज ने यह कहा कि महाराज मेरे जो आचार्य हैं, मेरे जो पितर हैं, आचार्य मैं उनके कुल में अध्ययन कर रहा हूँ परन्तु उनके कुल में बुद्धिमान तो बहुत हैं परन्तु वहाँ भगवन् देखो द्रव्य की हीनता हो गई है। मैं द्रव्य चाहता हूँ। तो मुनिवरो! देखो महाराजा जाह्लवी कहते हैं ब्रह्मवेत्ताओं से मैंने द्रव्य को प्रदान किया और यह कहा कि जाओ ब्रह्मचारी ले जाओ क्योंकि विद्यालय पवित्र होने चाहिएँ, विद्यालय में बुद्धिमत्ता होनी चाहिए इससे मेरा राष्ट्र पवित्र बन जाए। महाराजा जाह्लवी ने कहा कि **मेरी सबसे प्रथम समिधा ब्राह्मण मेरे राष्ट में हों, द्वितीय मेरे यहाँ क्षत्रिय हों जिन क्षत्रियों से मेरा राष्ट्र बलिष्ठ होता है, पवित्र बनता है और उनमें**

धर्म पिरोया हुआ रहता है। इसी प्रकार तृतीय जो समिधा है वह वैश्व होनी चाहिए, वैश्व अपने द्रव्य को, कृषक उद्यम करने वाला हो, कृषक से जो द्रव्य आता है और भी नाना प्रकार का व्यापार बनज होता है, जिससे राष्ट्र की आभा बनती है, पवित्रतम बनती है। आज वह मेरे यहाँ ऊँचे होने चाहिएँ, सुचरित्र होने चाहिएँ, उनकी किसी प्रकार की हीनता न हो तो मेरा राष्ट्र पवित्र होगा।

अग्न्याधान की समिधा

परन्तु देखो उस समय उन्होंने कहा तो प्रभु आप जिन याज्य से अग्न्याधान करते हो वह समिधा कौन-सी है? उन्होंने कहा वह समिधा मेरे यहाँ जिससे मैं प्रातःकालीन याग करता हूँ, मैं और मेरी पत्नी जो याग करते हैं सबसे प्रथम हम ब्रह्म चिन्तन करते हैं, ब्रह्मयाग करते हैं और ब्रह्मयाग के पश्चात् हम देवपूजा करते हैं और देवपूजा के पश्चात् हम अतिथि की सेवा करते हैं। यह तीन याग हमारे राष्ट्र में तीन प्रकार की यह समिधा कहलाती हैं। सबसे प्रथम ब्रह्म का चिन्तन होता है, ब्रह्म के चिन्तन का अभिप्राय यह कि ब्रह्म की आभा में रमण करते रहते हैं। यह ब्रह्म क्या है? हमारे यहाँ प्रथम नियम माना है पवित्रतम् में कि पति-पत्नी अपने-अपने स्थान पर विराजमान हो करके प्रातःकाल अपने आसन को साफ करके ब्रह्म का चिन्तन करते हैं और चिन्तन करने की हे ब्राह्मणों! मेरे राष्ट्र में कोई ऐसा गृह नहीं है जिस गृह में ब्रह्म का चिन्तन न होता हो। पति-पत्नी ब्रह्म का चिन्तन न करते हों, एक आसन पर विद्यमान हो करके ब्रह्म क्या है ब्रह्म किसे कहते हैं? यह ब्रह्म क्या है इस ब्रह्म में इस संसार को पिरोया हुआ है, जिस ब्रह्म में हम अपने उस मानवीय आभा को पिरोने वाले हैं तो वह ब्रह्म का चिन्तन प्रत्येक राजा के प्रत्येक समाज में, गृह में होता रहता है, जिससे गृह में सात्विकता आ जाए, मानवता आ जाए और मानवता आ करके शिष्टाचार आ जाए, सदाचार आ जाए, क्योंकि ब्रह्म के चिन्तन से नाना लाभ होते हैं। ब्रह्म का चिन्तन करने वाले पति-पत्नियों के गृह में सन्तान बुद्धिमान होती है।

राजा जाह्नवी ने बहुत पुरातनकाल में कहा था। मेरे यहाँ मेरे राष्ट्र में भोगवाद नहीं है, मेरे राष्ट्र में तो केवल शिष्टाचार है, मेरे राष्ट्र में याग होते हैं और याग भी भिन्न-भिन्न प्रकार के, माता-पिता यह चाहते हैं कि हमें सन्तान को जन्म देना है, हमें सन्तान को उत्पन्न करना है तो माता-पिता चिन्तन करते हैं और चिन्तन करने के पश्चात् वह अपनी-अपनी हवि को अपने-अपने आसन पर परणित कर देते हैं। उससे सुसन्तान का जन्म होता है और वह जो सुसन्तान है वही गृह को ऊँचा बनाती है और जो माता-पिता अपने बाल्य को ऊँचा नहीं बना सकते, महान् नहीं बना सकते, ब्रह्मचरिष्यामि नहीं बना सकते उन माताओं का जीवन न होने के तुल्य कहलाता है। वह माता सौभाग्यनी होती है जो माता अपने गर्भस्थल में माता मदालसा की भाँति अपने प्यारे पुत्र को गर्भाशय में ब्रह्म का उपदेश देने वाली है। वह गृह धन्य होते हैं, वह राष्ट्र धन्य होता है जिस राजा के राष्ट्र में ब्रह्म का चिन्तन होता हो।

देवपूजा

प्रत्येक गृह अपने आश्रम में ब्रह्म का चिन्तन करने वाले हों और उसके पश्चात् वह देवपूजा करने वाले हों, देवपूजा कौन करता है? देवपूजा वह माता-पिता करते हैं जिनके गृह में सुगन्धि होती है, बाल्य ऊँचे बनते हैं। माता-पिता प्रातःकालीन देवपूजा करते हैं, देवपूजा किसे कहते हैं? समिधा को अग्न्याधान किया, अग्नि प्रदीप्त हो गई है और उसमें स्वाहा कहते हैं अपनी वाणी को अग्नि की तरङ्गों पर विश्राम करा करके वह द्यौ लोक को प्राप्त हो जाता है, वह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाती है। वह देवपूजा कैसा स्वच्छ हृदय है, परमात्मा की वाणी से कहता आचार्य उद्‌बुद्ध स्वाहा अग्नि मानव उद्‌बुद्ध करता है और स्वाहा अग्नि कह रहा है। हे उद्‌बुद्ध होने वाली अग्नि! तू अन्तरिक्ष में रमण करने वाली है तू द्यौ लोक का प्राप्त होने वाली है। वह माता-पिता धन्य हैं जो अपनी वाणी को द्यौ लोक में पहुँचा देते हैं अन्तरिक्ष में पहुँचा देते हैं। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह

वाणी अपने स्वरूप को ले करके द्यौ लोक को प्राप्त हो जाती है। परिणाम क्या? देवताओं का दूत कौन है? वह देवताओं का दूत ही तो अग्नि कहलाती है। अग्नि महान् है।

अतिथि सेवा

तृतीय जो समिधा है जो जीवन में प्रदीप्त होती है वह अतिथि की सेवा है। अतिथि की सेवा किसे कहते हैं? बुद्धिमान गृह में आता है और बुद्धिमान का स्वागत करते हैं और बुद्धिमान का जब स्वागत होता है तो बुद्धिमान प्रसन्न होता है, योगेश्वर प्रसन्न होता है और जब वह प्रसन्न होता है तो मुनिवरो! देखो अपने पुण्य को दे करके वह वहाँ से प्रस्थान करता है जो उसने अध्ययन किया है, शिक्षाओं का आकृत किया है। उस शिक्षा को गृह को दे करके वह अपने आसन को प्रस्थान करता है।

आत्मा की समिधा

मुनिवरो! उस समय महाराजा जाह्नवी ने जब यह ब्रह्मवेत्ताओं को कहा, तो उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! उन्होंने कहा प्रभु हम तो आत्मा की समिधा को जानना चाहते हैं प्रभु! जिससे आत्मवेत्ता बनता है पुरुष। यह तो हमने साधारण उपदेश आपसे पाया है, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि **आत्मा का उत्थान कौन-सी अग्नि से, कौन-सी समिधा से होता है,** जिससे हम आत्मवेत्ता बनें और आत्मा में प्रवेश करते हुए आत्मवत् को प्राप्त होते रहें। मेरे प्यारे महाराजा जाह्नवी ने कहा कि आत्मा का उत्थान करना है। हे ब्रह्म जिज्ञासुओं! हे आत्मा के जिज्ञासुओं! आज यदि तुम यह चाहते हो कि हम आत्मा का कल्याण चाहते हैं आत्मा को ऊर्ध्वागति में ले जाना चाहते हैं तो 'ब्रह्मचरिष्यामि देवत्व ब्रह्म लोकाः' आज मैं तुम्हें एक ही वाक् प्रकट करा देता हूँ जहाँ यह जो ब्रह्म की चर्या है, ब्रह्मचर्य जो हमारे शरीर में प्रवास है, गति कर रहा है इसको प्राण के द्वारा प्राण रूपी तरकस से तीर की भाँति इसका ओजस्व करा दो और उससे आत्मा मनस्तत्व पृहे लोकाः एक ही लक्ष्य

रहता है कि आत्मा को जानना है। जब उस पर, धनुष पर तीर रख लिया जाता है तो उसका लक्ष्य ब्रह्म को प्राप्त करना, वह ब्रह्म का यह प्राण प्राणायाम् करना और प्राण के द्वारा उस आत्मा को जानना क्योंकि मन को आत्मा के, आत्मा मन को प्राण रूपी तरकस के ऊपर तीर की आभा में अभ्यस्त करा देना चाहिए, जिससे वह आत्मा में प्रवेश कर जाए और आत्मवत् जो है यह आत्मा का ज्ञान ही संसार में एक मानवता को प्रवेश करा देता है। **आत्मज्ञान है जो राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, आत्म ज्ञान है जो मोक्ष को ले जाता है,** आत्मा का जो बलिष्ठ प्राणी होता है वह सन्तान से हीन नहीं हो सकता। वह अपने जीवन में ऊँचे कर्मों से हीनता को प्राप्त नहीं होता। इसीलिए मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने प्यारे महानन्द जी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा था कि मानव को अपनी आत्मा को ऊर्ध्वा बनाना चाहिए। आत्मवत् जो पुरुष होता है उसके शरीर में वीरत्व होता है और जो वीरत्व होता है वह देखो जहाँ देवयाग करता है, वहाँ पितर याग में सफलता को प्राप्त होता है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने वाक्यों को प्रकट करते हुए कहा था जिस संसार में मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना है अपने जीवन में आत्म-तत्त्वों को प्राप्त करना है, आत्म ब्रह्मलोकों को प्राप्त करना है।

आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है? आज मैं यह महाराजा राजा जाह्नवी के वाक्यों को प्रकट कर रहा हूँ। महाराजा जाह्नवी जहाँ ब्रह्मवेत्ता जहाँ वह राष्ट्र में कुशल थे, वहाँ आत्मवत् को जानते थे, वहाँ ब्रह्मवेत्ता भी कहलाए जाते थे। ब्रह्म जिज्ञासुओं ने जब यह वाक् प्रकट किया तो उस समय उन्होंने कहा कि महाराज **आत्मा का सन्तान का क्या सँग्रह है।** आज जो आपने सन्तान को कहा है, अथवा पुत्र को कहा है। उस समय महाराजा जाह्नवी कहता है कि यह मानव के जीवन में स्वाभाविक परिणाम की इच्छा होती है। एक मानव माता-पिता जो अपने गृह में कर्म करते हैं, तो कर्म करने के पश्चात् मानव को परिणाम की इच्छा होती है। उस परिणाम में मानव का यह स्वभाव बन जाता है कि वह पितरयाग करता है और पितर

बनने की उसे स्वतः एक आत्मा की पिपासा जागरूक होती है। इसीलिए मैंने यहाँ पुत्र की आभा उच्चारण की है। महाराजा जाह्नवी के इन वाक्यों को पान करने वाले ऋषियों ने कहा कि प्रभु हम यह जान सकते हैं कि **आत्मा के मोक्ष का पुत्र का क्या सम्बन्ध है?** उन्होंने कहा कि मोक्ष का और पुत्र का विशेष कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु जो मानव त्यागपूर्वक रहता है इस संसार में त्याग से रहता है क्योंकि पितर जो होता है और पुत्र जो होता है, वह माता-पिता का हृदय होता है। परन्तु वह जो हृदय है वही तो हृदय वर्चोसी बना देता है और जो हृदय है, एक हृदय को त्याग करके एक हृदय को देवगति को प्राप्त कराता हुआ वह मोक्ष की पगडण्डी को प्राप्त कर लेता है। परन्तु देखो मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने वाक्यों को निर्णय देते हुए कहा था। महाराजा जाह्नवी ने जब यह वाक् कहा तो ऋषिवर उनके वाक्यों से सन्तुष्ट होने लगे। उन्होंने कहा कि महाराज मोक्ष में क्या होता है? पुत्र की आभा तो समाप्त हो जाती है। उन्होंने कहा कि जैसे मानव यह आत्मा और परमात्मा का पुत्र है और मोक्ष में जाने के पश्चात् वह परमात्मा को प्राप्त हो जाता है, परमात्मा में आभाहित आनन्द को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार पुत्र बनने में ही मानव अपने ब्रह्म वेग ब्रह्मज्ञान को प्राप्त कर सकता है। जैसे आचार्य कुल में प्रवेश हो करके शिष्य जब ब्रह्मज्ञान की आभा में रमण करता है और ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करने के लिए उसकी उत्कृष्ट इच्छा होती है तो मुनिवरो! वह पुत्र बन करके, शिष्य बन करके उनके चरणों को छू करके वह ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करता है। क्योंकि देखो वह उसका पुत्र है, क्योंकि पुत्र ही पिता के आँगन को प्राप्त हो जाता है। पिता के आँगन में प्रवेश करके जैसे मोक्ष में जाने वाला आत्मा प्रकृति की तरङ्गों को त्याग करके वह परमात्मा ब्रह्म रूपी पितर के द्वार पर प्रवेश कर जाता है, उसी प्रकार शिष्य अपने गुरु के द्वार में प्रवेश कर जाता है, वह ब्रह्मज्ञानी बनता है। ब्रह्मज्ञानी बन करके उसको क्रिया में लाता है क्रिया में ला करे वह रजोगुण, तमोगुण को समाप्त करता है वह उनमें प्रवेश करके ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

महर्षि का कात्याङ्ग के गृह में उपदेश

एक समय महर्षि साकल्य मुनि महाराज मुनिवरो! देखो कात्याङ्ग के गृह में जा पहुँचे। भ्रमण करते हुए कात्याङ्ग गृह में पहुँचे तो कात्याङ्ग के यहाँ एक उनकी कन्या थी, उस कन्या ने कहा प्रभु मुझे कुछ उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा कि तुम्हें क्या उपदेश दूँ! कन्या ने कहा, नहीं! भगवन्! आप तो बड़े महान् तपस्वी हैं, वेदज्ञ हैं दर्शनों के गर्भ को जानते हैं। उन्होंने कहा कि देखो! मैंने तो यह पाया है अब तक मुझे जो शिक्षा प्राप्त हुई वह यह हुई है कि किसी से हीनता के वाक्यों को मत उच्चारण करो। तुम कन्या हो, कात्याङ्ग के गृह में तुम्हारा जन्म हुआ है जब तुम मानो **अपने कुल का तुम्हारा परिवर्तन हो** तो तुम अपने हृदय में यह इच्छा प्रकट मत करो कि मेरी जो माता है या पितर है मेरे पालन-पोषण के लिए कुछ प्रदान करें क्योंकि यह इच्छा करना तुम्हारे लिए मानो तुम्हारी हीनता है। यह मेरे पूज्यपाद पिताजी ने माता का उपदेश और आचार्यों का मुझे यह उपदेश रहा है। यदि कन्या की यह इच्छा रहती है कोई परिवर्तन होने पर पति को, पति को न प्रवेश होने पर क्या मैं मानो मेरे लिए कोई इच्छा माता प्रहे वाचो हो जाए तो यह मेरी हीनता मेरा आत्मा उससे मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। ऐसा ऋषि साकल्य ने देखो कात्याङ्ग की कन्या को यह उपदेश दिया। कात्याङ्ग की कन्या ने और स्वाँति ने यह कहा कि हे भगवन्! बहुत प्रियतम है मानो आपका उपदेश मुझे शिरोमणी है क्योंकि वाक्यों में यह इच्छा प्रकट ही नहीं करनी चाहिए क्योंकि **मानव को अपने क्रियाकलापों में, तपस्या में, मानवीयत्व में मानो शरीर रत्त रहना चाहिए।** जब ऋषि ने यह वाक् प्रकट किया तो कात्याङ्ग की कन्या ने कहा कि धन्य है प्रभु! उन्होंने कहा प्रभु मुझे कोई और उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा कि हे देवी! मेरा उपदेश तो केवल यही है कि **मानव को वेद का अध्ययन करना चाहिए, वेद प्रकाश में रत्त रहना चाहिए,** ''वेदाः अमृताम् ब्रह्म लोकाम्'', यह जो वेद है यह अमृत है यह परमपिता परमात्मा के मानो हमारे यहाँ एक वेद है परमपिता परमात्मा

जो सृष्टि का, सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है निर्माणवेत्ता है। मानो सृष्टि के प्रारम्भ में मानव के ज्ञान और विज्ञान को और मानो अपने संस्कारों को उपलब्ध करने के लिए ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में रत्त होने के लिए मानो उन्होंने वेद का पवित्र हमें ज्ञान दिया है। इस वैदिक ज्ञान को, वैदिक प्रकाश को अपना करके हम अपने मानवीयत्व को देखो ऊर्ध्वा में ले जाएँ और मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करें।

मेरे प्यारे देखो कात्याङ्ग की पत्नी ने कहा प्रभु आप उपदेश दे रहे हैं, मेरी कन्या को यह तो बड़ा प्रिय है परन्तु देखो मोह के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है कि मोह होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? कात्याङ्ग की पत्नी से **ऋषि ने कहा कि मोह नहीं होना चाहिए परन्तु कर्त्तव्य का पालन होना चाहिए,** क्योंकि कर्त्तव्य में मानव की प्रवृत्तियाँ निहित रहती हैं। एक माता के गर्भस्थल में बालक पनप रहा है परन्तु माता यह जानती है कि निर्माण करने वाला प्रभु है यह परमपिता परमात्मा की सम्पदा है यह मेरी सम्पदा नहीं है। ''इदन्नमम्ः'' यह मेरी सम्पदा नहीं है यह सम्पदा प्रभु की है। मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक मानो प्रभु की आज्ञा का, देखो उसके नियमों का पालन करने वाला हो तो मेरा यह जीवन सार्थक बन जाएगा। मानो जब माता के हृदय में ये विचार रहते हैं तो माता मानो अपने बालक को जन्म दे करके मानो अपने में प्रसन्न है कि मेरा बाल्य पूर्णायु होगा। क्योंकि माता यह जानती है जो मेरे विचारों में एक निष्ठा रहेगी तो मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक भी पूर्णायु को प्राप्त होगा और जब पूर्ण आयु में होगा तो माता-पिता को देखो उसका शोक भी नहीं होगा। शोक उस काल में प्राणी को होता है जब प्राणी का मिलन हो करके विच्छेद हो जाता है। हमारे यहाँ उस काल में मुनिवरो! देखो माता-पिता से पूर्व बालक का (पुत्र का) विच्छेद नहीं होता है क्योंकि माता अपने कर्त्तव्य का पालन करती है और मृत्यु के रूप को जान लेती है। अपने बाल्य को माता कहती है, हे बालक! यह जो संसार है, जिस संसार में हम और तुम विद्यमान हैं यह संसार निस्सार है इसमें कोई सार नहीं है यह तो केवल विडम्बना का एक क्षेत्र बना हुआ है, तो मुनिवरो! देखो माता कहती है, हे

बालक! इस संसार से उपराम होना। **इस संसार को अपने उपाँगों से जानना ही हमारा कर्त्तव्य है।** हे बालक! तुम मुझे जानो मैं तुझे जानूँ संसार में देखो मृत्यु का अभाव हो जाता है। माता जब यह अपने बाल्य को यह शिक्षा बाल्यकाल में संस्कारों को उपलब्ध करा देती है, तो मुनिवरो! देखो ''मातम् ब्रह्मा'' वह कहती है बालक तेरा अज्ञान होना ही मृत्यु है, शोकाकुल होना ही मृत्यु है, हे बालक! संसार में निराशा ही तेरी मृत्यु है। मेरे प्यारे जब माता बालक को यह देखो गौरव के वाक्य प्रकट करती है तो माता कर्त्तव्य का पालन कर रही है और जो कर्त्तव्य का जो उपदेश है माता का वह महान् और पवित्र बन जाता है। आभा में नियुक्त हो जाता है।

मुनिवरो! देखो कात्याङ्ग के गृह में जब साकल्य मुनि महाराज ने यह उपदेश दिया तो मुनिवरो! देखो कात्याङ्ग की पत्नी चरणों को स्पर्श करके बोली धन्य है प्रभु! परन्तु मेरा एक प्रसङ्ग और है भगवन् क्या जब बाल्य महान् बन जाए और वह गृहस्वामीवादी बन जाए तो माता-पिता को क्या करना चाहिए? मेरे प्यारे देखो उस समय ऋषि ने कहा कि माता-पिता को मानो प्रभु की गोद में चला जाना चाहिए, वे ब्रह्मयाग में रत्त हो जाएँ और ब्रह्मयागी बन जाएँ, ब्रह्मयागी वह प्राणी होते हैं जो ब्रह्म का चिन्तन करते रहते हैं, और ब्रह्मज्ञान को प्रकृति के गर्भ में जो ब्रह्म की आभा निहित हो रही है, उस आभा में माता-पिता जब रत्त हो जाते हैं, वह जो उसके गृह में बाल्य-बालिका हैं माता-पिताओं के उस ब्रह्मज्ञान के, ब्रह्मज्ञान का देवत्व जानने का वह बाल्य इसका अनुकरण करते हैं तो गृह में मानो स्वर्ग की स्थापना हो जाती है, स्वर्ग आ जाता है वायुमण्डल दूषित नहीं होता। वायुमण्डल जब दूषित होता है जब गृहस्वामी और गृहस्वामिनी गृह में निहित रहते हैं देखो पुत्र गृहस्वामी हो जाता है, गृहस्वामिनी का वह प्रोः हो जाता है उस समय देखो वह माता-पिता उसकी आभा में उसके क्रियाकलाप में जब बाधक बनते हैं तो उस समय गृहम् ब्रह्मा वह सतवादी विचार न रह करके कलह में गृह हो जाते हैं और वह गृह नार्किक बन करके, वही नार्किक विचार वायुमण्डल में प्रवेश होते हैं तो वायुमण्डल भी दूषित हो जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्गार

1. जो चली गयी उस चेतना का नाम आत्मा स्वीकार किया गया है।
2. आत्मा के लिये संसार रचा जाता है, रचने वाला प्रभु है और रची जाने वाली प्रकृति है।
3. जो ऋषि-मुनि होते हैं, तपे हुये पुरुष होते हैं उनका एक विचार होता है।
4. संस्कार जो हैं, ये मन की आभा है।
5. प्रकृति का यदि कोई सूक्ष्म तत्त्व है तो वह मन है।
6. संस्कारों के न रहने का नाम ही मोक्ष कहा जाता है।
7. जो आत्मवेत्ता पुरुष होते हैं, जो आत्मा को जान लेते हैं उनके सम्पर्क में जाने में मानव का हृदय परिपक्व होता है।
8. जहाँ भौतिकवाद समाप्त होता है, वहाँ आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ होता है।
9. आत्मा के प्रकाश में मन प्रकाशित होता रहता है।
10. जड़ मन का आत्मा के समक्ष अपना कोई अस्तित्त्व नहीं है।
11. "अहम् ब्रह्मास्मि" अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ मानव को यह कहने का अधिकार नहीं है।
12. संसार मानव के हृदय में प्रतिष्ठित है, हृदय प्रभु में प्रतिष्ठित है।
13. ब्रह्म के समक्ष आत्म-समर्पण से नम्रता तथा महत्ता प्राप्त होती है।
14. परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान और विज्ञान वेद अनन्त हैं।
15. प्रभु से परिचय, समर्पण बिना मानव में नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ बनी रहती हैं।
16. प्रकृति का कण-कण ओ३म् रूपी धागे से पियोया हुआ है।
17. मानव तपस्या तथा योग से मानवों के तथा पशुओं तक के अन्तःकरण प्रभावित कर सकता है।

।।ओ३म् ।।

श्रद्धा-दान

श्री मधुसूदनेश्वर प्रकाश जी

आदरणीय श्री मधुसूदनेश्वर प्रकाश जी, समिति के प्रकाशन मन्त्री जी ने पुनः से पूज्यपाद गुरुदेव की अमृत वर्षा को ऊर्ध्वागति प्रदान करने के लिये एक लाख (1,00,000) रुपये का सात्विक सहयोग अत्यन्त उदार व विनम्र भाव से अर्पित किया है। अपने पद पर सुशोभित होने के समय से पिछले वर्षों में कई बार इस प्रकार की आहुति निरन्तर प्रदान करते रहे हैं। इसके साथ-साथ लाक्षागृह वारणावत में प्रति वर्ष होने वाले प्रत्येक याग में व समिति द्वारा आयोजित दिल्ली यागों में भी अपनी आहुति निरन्तर प्रदान करने में अग्रणीय बने हुये हैं।

ऐसे श्रद्धा व वैदिक सम्पदा से सम्पन्न परिवार की आत्म उन्नति के सङ्ग-सङ्ग समिति सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ नवम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

दिनाँक 13 नवम्बर 2022 रविवार से 20 नवम्बर 2022 रविवार तक

यज्ञस्थलीः देवभूमि, मौहल्ला तिहाई, ग्राम खरखौदा, (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास) मेरठ

—: निमन्त्रण पत्र :—

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् आदि ऋषि पूज्य गुरुवर ब्रह्मा जी महाराज के परमप्रिय एवम् ज्येष्ठ शिष्य पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (त्रेताकालीन शृङ्गी ऋषि जी महाराज) की पावमानी प्रेरणा एवम् शुभ आशीर्वाद से महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि याग प्रचार समिति ग्राम खरखौदा के तत्त्वावधान में **(राष्ट्र कल्याणार्थ नवम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ)** वैदिक परम्परा के अनुसार आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति द्वारा सम्पन्न होगा। जिसको इस कलयुग में पुनः से पूज्यपाद गुरुदेव ने जागृत किया और अपनी ये दिव्य ज्योति अपने शिष्यों को इस विश्व में प्रकाशमान बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उसी मर्यादा को ऊर्ध्वागति में सम्पन्न बनाते हुए प्राणी मात्र के जीवन की जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए इस महायज्ञ का आयोजन देवभूमि, मौहल्ला तिहाई, ग्राम खरखौदा में आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास के सङ्ग पाँच यज्ञ वेदियों पर सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व साँय समयानुसार अपने परिवार, सम्बन्धी व ईष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करते हुए अपने जीवन कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें।

यज्ञ के ब्रह्मा — आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, वारणावत।

आचार्य एवम् वेदपाठी — श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, वारणावत एवम् गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली।

—: कार्यक्रम :—

दिनाँक 13 नवम्बर 2022 रविवार से 19 नवम्बर 2022 शनिवार तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ सन्ध्या प्रतिदिन

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायंः 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनाँक 20 नवम्बर 2022 रविवार प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवम् आशीर्वाद, शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज।

निवेदक समस्त खरखौदा निवासी

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेध-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	55.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	160.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
81.	यौगिक प्रवचन माला भाग-21	170.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, पेनड्राइव के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पञ्चशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्री रत्न तुली	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुमन त्यागी, मुम्बई	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

सूचना

पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80-जी के अन्तर्गत छूट की सुविधा उपलब्ध है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्बोधन

आओ, आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की जो अनुपम देन है, वह जो अनुपम प्रकाश है उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है हे महाप्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 51 : अंक : 593 मूल्यः
नवम्बर 2022 पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-11-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 51 : अंक : 593 मूल्यः
नवम्बर 2022 पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-11-2022
Published on 5th day of the same month